वार्तालाप नं.489 जयपुर (नराजस्था) दिनांक 10.01.08
Disc.CD No.489, dated 10.01.08 at Jaipur (Rajasthan)

समयः 03.12-07.30

जिज्ञासुः- बाबा, ये 84 जन्म लेते हैं पाँच हजार साल, मानव रूप में। तो फिर ये 84 के अलावा कोई जन्म नहीं.........

बाबा- 84 जन्म के अलावा और कोई जन्म माना 85वाँ जन्म?

जिज्ञासु- माना मानव रूप में चोला जन्म लेते हैं।

बाबा- मनुष्य, मनुष्य जो है वो मनुष्य एक बीज है। आत्मा क्या है?

जिज्ञासु- बीज है।

बाबा- जैसे गेहूँ के दाने होते हैं ना। तो सब बीज हैं लेकिन वो गेहूँ की जाति है। अब ज्वार के दाने रखे हुए दूसरे बैग में; वो ज्वार की जाति है। है तो बीज ना? तो ऐसे ही ये जो आत्मायें है बिंदु-3, ये एक जाति की नहीं है। क्या? कोई आत्मायें मनुष्य जाति की हैं, कोई जानवर जाति की हैं। जानवर जाति की आत्मा, मनुष्य जाति की नहीं बन सकती। कोई कहे गेहूँ का बीज बाजरा बन जायेगा; सो नहीं बनेगा।

जिज्ञासु- ये तो सही बात है।

बाबा- हाँ।

Time: 03.12-07.30

Student: Baba, we take 84 births in the form of human beings. So, is there no birth other than these 84 births....

Baba: Any birth other than 84 births, i.e. the 85th birth?

Student: I mean to say we take birth in the form of human beings.

Baba: Human being is a seed. What is a soul?

Student: It is a seed.

Baba: Just as there are wheat seeds. So, all are seeds, but that is a species of wheat (*genhu*). Now there are seeds of millet (*jowar*) in another bag. That is a species called *jowar*. They are seeds, aren't they? So, similarly, these point-like souls do not belong to the one species. What? Somes souls belong to the human species and some to the animal species. A soul of the animal species cannot become a member of the human species. Someone may say that the seed of wheat should become the seed of *bajra*; that cannot happen.

Student: This is correct.

Baba: Yes.

जिज्ञासु- एक बात है ना अब तक जो कहते आ रहे हैं ये आत्मा कई रूप लेती है।

बाबा- 84 लाख योनियों में जाती है।

जिज्ञासु- हाँ, ये तो गलत है ना।

बाबा- यही तो बात बताई कि मनुष्य जो है अपनी-2 प्रकार की अवधारणायें बनाता चला आया। असली बात किसी को पता ही नहीं हैं। असली बात ना पता होने के कारण उन्होंने 84 के चक्र

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

को 84 लाख योनियों में ड़ाल दिया। क्यों ड़ाल दिया? ताकि लम्बा हो जाये चक्कर। सृष्टि चक्र ही लम्बा हो जायेगा तो कोई हमसे पूछेगा नहीं कि सारा हिसाब बताओ 84 लाख योनियों का, तो कोई हिसाब बता ही नहीं पायेगा। अगर 84 का चक्कर होगा तो कहेंगे उन 84 का चक्कर चारों युगों में कैसे चलता है सो तो बताओ। किसी को मालूम ही नहीं।
Student: There is one thing. Whatever we have been saying so far, the soul takes many forms.
Baba: It passes through 84 lakh (hundred thousand) species.
Student: Yes, it is wrong, isn't it?
Baba: This is what was said that human being has been developing his own individual perceptions. Nobody knows the truth at all. Because of not knowing the truth they have mixed up the cycle of 84 (births) with 84 lakh species. Why did they mix up? So that the cycle becomes long. [They thought] if the world cycle becomes long then nobody will ask us about the calculation of the 84 lakh species. Nobody will be able to say anything about the calculations. If there is a cycle of 84 (births), then they may ask them to say how the cycle of 84 (births) operates in the four ages. Nobody knows at all.

जिज्ञासु- बाबा एक बात है जैसे कसाई जानवरों को मारता है।
बाबा- हाँ, जी।
जिज्ञासु- तो उसका प्रायश्चित उसको कैसे मिलेगा। वो तो पास तो करता ही है.....
बाबा- इसमें अंतर पड़ता है। कसाई, इस जन्म में जो कसाई है वो एकदम इस जन्म में तो कसाई नहीं बन गया। पूर्वजन्मों से उसका कोई कर्म-संस्कार आ रहा है जिससे वो कसाई बन गया, कसाई के यहाँ जन्म लिया। कोई जन्म लेकर के कसाई बन जाते हैं, कोई जन्म नहीं लेते हैं। कसाई के यहाँ नौकरी कर ली और संस्कार बन गये, और कसाई बन गये। फिर अगला जन्म कसाई के घर में ले लिया; तो, तो हिसाब ये है कि जो भी कर्म करता है वो कर्म तीव्रगति से करता है तो अगला जन्म उसका वैसा ही जल्दी मिल जाता है। अगर धीमी गति से कर्म किया जाए तो उसका फल जल्दी नहीं मिलता; कई जन्मों के बाद मिलता है। जो कसाई, कसाई बनकर के अभी कार्य कर रहा है उसकी बुद्धि में नहीं आता क्योंकि जन्म ही कसाई के घर में लिया है, बचपन से ही देखता चला आया। तो उसकी बुद्धि में ये नहीं आयेगा कि गाय का काटना पाप है या कोई प्राणी का काटना पाप है; लेकिन पहली बार जब पाप करता है आदमी तो उसको जरूर एहसास होता है। फिर वही पाप दुबारा करेगा तो कम एहसास होगा फिर तिबारा करेगा तो और कम एहसास होगा; तो कोई की चोरी करने की, पाप करने की आदत पड़ जाती है। फिर वो ऐसा नहीं लगता है कि हम कोई पाप कर रहे है।
Student: Baba, there is one thing, for example, a butcher kills animals. .
Baba: Yes.
Student: So, how will he repent for that? He definitely passes through....
Baba: There is a difference in this. The one who is a butcher in this birth did not become a butcher suddenly in this birth. He has been carrying some *karma sanskars* of the past births due to which he became a butcher or was born in a butcher's family. Some become butchers by being born (in a butcher's family) and some are not. They take up a job with the butcher and develop the *sanskars* and became a butcher and then are born in a butcher's family in the next birth; so, this is the account that whatever actions someone performs, if he performs it intensely,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

then he takes the next birth soon accordingly. If the actions are performed slowly, then its fruits are not received soon; it is received after many births. A butcher who is working as a butcher now, it does not come to his intellect because he was born in a butcher's family; he has been seeing since the childhood; so, it will not come to his intellect that it is a sin to kill a cow or to kill a living being. But when a person commits a sin for the first time he definitely realizes (the mistake). But when he repeats the same sin, he feels (remorseful) to a lesser extent and when he commits it for the third time he will feel to an even lesser extent. So, if someone develops the habit of stealing, of committing sins, then he does not feel that he is committing a sin.

जिज्ञासु- बाकी बाबा उसको भोगना तो पड़ता होगा?

बाबा- क्यों नहीं भोगना पड़ेगा लेकिन ये है कि....

जिज्ञासु- बाबा शराब पीते है, ये भी पाप है?

बाबा- शराब पीते हैं तो शराब पीकर के बुद्धि नहीं खराब होती?

जिज्ञासु- खराब होती है।

बाबा- बुद्धि खराब होती है तो दूसरों को दुःख नहीं देते?

जिज्ञासु– देते हैं।

बाबा- हाँ, फिर।

Student: Baba, he will have to suffer, will he not?
Baba: Why will he not have to suffer, but....
Student: Baba, someone drinks liquor; that too is a sin?
Baba: If someone drinks liquor, does the intellect not spoil after drinking liquor?
Student: It spoils.
Baba: When the intellect becomes spoilt, don't they give sorrow to others?
Student: They do give.
Baba: Yes, then.

समयः 07.32-10.00

जिज्ञासुः- बाबा जब इन्सान मर जाता है तो हम आत्मा को उसके नाम के 12 ब्राहमण कर रहे हैं, ये कर रहे तो ये क्यों करते हैं फिर? जब आत्मा कुछ खाती-पीती नहीं है, कुछ नहीं करती है तो ऐसे क्यों करते है?

बाबा- ज्ञान में चलते समय संगमयुग में जो-2 बातें ज्ञान के तरीके से हमने की है वो फिर भक्तिमार्ग में स्थूल में अपनाते रहते हैं। क्या? यहाँ क्या है? यहाँ जो मरते हैं ना, तो जीते जी मरने की बात है। जो आत्मायें जीते जी मरने की स्टेज पर पहुँच जाती हैं, देहभान से मर जाती हैं तो उनकी नजदीकी पुरूषार्थी होते हैं कोई, कि नहीं होते है? कोई नजदीकी पुरूषार्थी जो होते हैं उनको भोग लगाया जाता है बी.के.वालों में। अपने एड़वान्स में कोई भोग-वोग की बात है ही नहीं। तो ये परम्परा किसने ड़ाली? ब्राहमणों की दुनिया में परम्परा ड़ाली।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 07.32-10.00
Student: Baba, when a person dies, we feed 12 Brahmins or do something else in the name of that soul; when the soul does not eat or drink anything, when it does not do anything, then why do we do all this?
Baba: Whatever we have done according to knowledge while following the path of knowledge in the Confluence Age, we adopt those things in physical form in the path of bhakti. What? What happens here? Here we die, don't we? It is about dying while being alive. The souls which reach the stage of dying while beign alive, those who die from body consciousness, are there any *purusharthi* (those who make spiritual efforts) who are close to their stage or not? The close *purusharthis* are offered bhog among BKs. In our advance (party), there is no question of bhog, etc. So, who laid the foundation for this tradition? This tradition was started in the world of Brahmins.

ये दहेज की प्रथा है। बाबा ने तो मुरली में कहा नहीं कि कन्या जब सरेण्ड़र होती है तो उसका पैसा भी माँ-बाप से लेना चाहिए। नहीं कहा ना। फिर ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद अब क्या हो रहा है? पैसे ले रहे ना। जब तक पैसे देंगे नहीं तब तक कन्या सरेण्ड़र करेंगे नहीं। तो ये देने की प्रथा का फाउन्डेशन किसने ड़ाला? वही कच्चे ब्राहमणों ने, वही विधर्मी आत्‍माओं ने। जो दूसरे-2 धर्म में कनवर्ट होनेवाले ब्राहमण हैं, कच्चे ब्राहमण हैं, कच्चे देवता बनते हैं, कम जन्म लेते हैं वही ये सब भक्तिमार्ग के टंट-घंट सिखाते हैं आकर के।

The practice of dowry [for example]. Baba has not said in the Murli that when a virgin surrenders (i.e. dedicates her life for service of God) money should be taken from her parents. He did not say so, did He? Then what is happening now after Brahma Baba left his body? They are taking money, aren't they? Unless they are given money, they do not allow the virgin to surrender [herself]. So, who laid the foundation for taking (dowry)? Those very immature Brahmins, those very *vidharmi* souls, the Brahmins who convert to other religions, the immature Brahmins who become incomplete deities and take fewer births; it is they who come and teach these rituals of the path of *bhakti.*

जिज्ञासु- 12 दिनों का क्या संबंध है?
बाबा- माला है? माला में कितने धर्म है? 9 धर्म है और उनके ग्रुप कितने-2 के है? 12-12 के ग्रुप है। तो वो एक परिवार हो गया ना।
जिज्ञासु- 12-12 का ग्रुप का होंगे।
बाबा- हाँ, 12-12 का परिवार। दुनिया की जितने भी मनुष्य है उनको कितनी राशियों में बांटा जाता है? 12 राशि में बांटा जाता है।
Student: What is the link of 12 days?
Baba: Is there a rosary? How many religions are included in the rosary? There are 9 religions (in the rosary) and their group consists of how many beads? There are groups of 12 each. So, that is like a family, isn't it?
Student: There will be groups of 12 each.
Baba: Yes, family of 12 each. All the people of the world are divided into how many zodiac signs? They are divided in 12 zodiac signs.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 10.05-12.55
जिज्ञासुः- इंसान, शेर को मारता है।
बाबा- हाँ, जी।
जिज्ञासु- शेर तो जानवर है।
बाबा- हाँ, जी।
जिज्ञासु- मानव की जो आत्मा है, शेर की आत्मा तो अलग-2 है।
बाबा- ठीक है।
जिज्ञासु- किंतु वो उसका प्रायश्चित आगे जाकर के उस मानव को वो उसको खा जायेगा ?
बाबा- खा भी सकता है।
जिज्ञासु- नहीं-2
बाबा- क्यों नहीं खायेगा? जानवर है उसकी आत्मा नहीं है?
जिज्ञासु- हाँ,जी।
Time: 10.05-12.55
Student: Human being kills lion.
Baba: Yes.
Student: A lion is an animal.
Baba: Yes.
Student: The soul of a human being and the soul of a lion are different.
Baba: It is correct.
Student: But in order to settle the account will it devour that human being in future?
Baba: It may devour.
Student: No, no.
Baba: Why can't it devour? Does not an animal have a soul?
Student: Yes, it has.

बाबा- और मनुष्य की आत्मा है। दोंनो का स्वतंत्र है। मनुष्य को तो और ज्यादा समझदार होना चाहिए। क्या? मनुष्य को बुद्धि है, जानता है कि किसी को हिंसा करेंगे तो उसको दु:ख होगा। अब वो चाहे कीड़ा-मकोड़ा हो चाहे पशु हो। हाँ, इतना है कि मनुष्य को मारने से जो पाप बनता है और जानवर को मारने से जो पाप बनता है उसमें अंतर पड़ जाता है।
जिज्ञासु- बाबा चींटियाँ तो खूब मरती हैं।
बाबा- चींटियाँ, मच्छर, कीड़े-मकोड़े ये तो मरते ही हैं ना लेकिन इनकी आत्मा में वो चैतन्यता नहीं है; जो चैतन्यता मनुष्यात्मा में चैतन्यता है वो चैतन्यता और दूसरे प्राणियों में नहीं है, मन-बुद्धि नहीं है। भगवान आयेंगे तो दूसरे प्राणी क्या ज्ञान सुनकरके पतित से पावन बनेंगे पहले?
जिज्ञासु- नहीं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- तो उनकी वैल्यू नहीं है। अरे भगवान तो मनुष्यों के सामने ही...कौन वैल्यूबल मनुष्य है और कौन वैल्यूबल नहीं है वो अभी बता दिया उसे कोई तालुक नहीं है। बाबा ने क्या बोला अभी? मनुष्य के अंदर ही ये कैटेगेरी बता दी तो जानवरों में तो जानवर, जानवर ही है।

Baba: And there is a human soul. Both [souls] are independent. Human being should be even more intelligent. What? (Someone said: he has an intellect) Yes. A human being has intellect; he knows that if we use violence against someone, he will experience pain. Well, whether it is a worm or insect, whether it is an animal. Yes, it is sure that the sins that someone accumulates on killing a human being and the sin that someone accumulates on killing an animal are different.
Student: Baba, a lot of ants die.
Baba: Ants, mosquitoes, worms and insects do die, don't they? But their soul does not have the same level of consciousness (*chaitanyata*). Other living beings do not have the same level of consciousness, the same [kind of] mind and intellect that a human soul has. When God comes, will other living beings change from sinful ones to pure ones by listening to knowledge first?
Student: No.
Baba: They do not have any value. Arey, God [speaks] in front of the human beings…. Who is a valuable human being and who isn't valuable has been said just now. It is not connected to that. What did Baba say just now? This category was mentioned within the human beings. So, among the animals… animals are just animals.

जिज्ञासु- कहने को बाबा, ऐसे कहते हैं कि जैसे अमृतवेला करते हैं ना तो पक्षी बहुत जल्दी उठ जाते हैं

बाबा- ठीक है।

जिज्ञासु- तो ऐसे कहते है कि इन्सान से ज्यादा जानवर अच्छे हैं जो भगवान का नाम लेते हैं।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- ना ज्यादा पतित बनते हैं ना ज्यादा पावन बनते हैं और मनुष्य, मनुष्यों में जो खास भगवान की औलाद है, क्या? जो 84 जन्म लेनेवाले हैं, सारी मनुष्य सृष्टि के बीज हैं, बाप हैं, पिता हैं, तो सबसे ज्यादा पॉवरफुल हुए न। तो जो जितना पॉवरफुल होगा उतना ही नीचे गिरेगा। जो ज्यादा नीचे गिरेगा सो उतना ही वो ऊँचा उठेगा।

जिज्ञासु- तो बाबा फिर वो अगले जन्म में क्या मनुष्य योनि लेंगे क्या?

बाबा- कौन?

जिज्ञासु- पशु-पक्षी ऐसे इस तरह से अपनी

बाबा- अरे बैंगन का बीज जो है वो कभी बबूल का वृक्ष बन सकता है?

जिज्ञासु- नहीं। जानवर तो जानवर ही है।

Student: Baba, it is said that… birds wake up very early at Amritvela.
Baba: It is correct.
Student: So, it is said that the animals are better than the human beings, they utter the name of God.
Baba: Yes.
Student: Neither do they become more sinful nor do they become purer and as regards human beings, among the human beings, those who are the special children of God; what? Those who

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

take 84 births, those who are the seeds, fathers of the entire human world, they are the most powerful, aren't they? So, the more powerful someone is, the more he will fall down. The more someone falls down, the higher he will rise.
Student: So, Baba will they become human beings in the next birth?
Baba: Who?
Student: The animals and birds.....
Baba: Arey, can a brinjal seed ever grow into a *babool* (acacia) tree?
Student: No. An animal is an animal.

समयः 12.59-14.03
जिज्ञासुः- अभी मुरली में बोला कि क्रोध वाले को पतित नहीं कहेंगे।
बाबा- नहीं।
जिज्ञासु- तो बाबा क्रोध भी तो किसी काम, इच्छा के पूरा न होने से आता है ना।
बाबा- क्रोध आता है लेकिन क्रोध आने से शक्ति क्षीण होती है?
जिज्ञासु- नहीं।
बाबा- और काम विकार आने से?
जिज्ञासु- शक्ति क्षीण होती है।
बाबा- शक्ति क्षीण हो जाती है, आदमी निस्तेज हो जाता है। पतित कहा ही किसको जाता है? पतित माना?
जिज्ञासु- गया काम से।
बाबा- हाँ, मन-बुद्धि ड़ल हो जाती है। जो मन-बुद्धि पहले चलायमान थी वो फिर उतनी चलती नहीं है। ब्राह्मण तो और ज्यादा अनुभवी हैं। वो जानते हैं कि जब विकारी जीवन जिन दिनों हो जाता है उन दिनों बुद्धि ज्ञान में चलती ही नहीं। क्यों नहीं चलती है? मन पतित बन जाता है। मन-बुद्धि की जो पॉवर है जो गतिशील होना चाहिए वो मन-बुद्धि मनन-चिंतन शील नहीं रहती। तो मन-बुद्धि भी नीचे गिरती है और जो तन की ताकत है वो भी, वो भी गिर जाती है।
Time: 12.59-14.03
Student: Just now it was said in the Murli that the one who becomes angry will not be called sinful.
Baba: No.
Student: But Baba someone becomes angry only when his desire for lust is not fulfilled, doesn't he?
Baba: He becomes angry, but does he become weak on becoming angry?
Student: No.
Baba: And what if someone becomes lustful?
Student: He loses his vigour..
Baba: He loses his vigour; a person becomes weak. Who is called sinful (*patit*)? What is meant by sinful?
Student: He loses everything.
Baba: Yes. The mind and intellect becomes dull. The mind and intellect which was active (*chalaaymaan*) earlier does not work to that extent. Brahmins are even more experienced. They know that during the days when someone becomes sinful the intellect does not think of knowledge at all. Why does it not work? The mind becomes sinful. The power of the mind and

intellect which should be active does not think and churn. So, the mind and intellect experiences downfall as well as the power of the body experiences downfall.

समयः 14.05-15.10

जिज्ञासुः- बाबा राम के भक्त, कृष्ण के भक्त जो हैं वो राम के भक्तों से नफ़रत करते हैं

बाबा- दोंनो ही एक दूसरे से नफ़रत हैं। "राम के भक्त रहीम के बंदे, हैं दोनों आँखों के अंधे"

जिज्ञासु- हम तो उनको सुधारना चाहते हैं ना।

बाबा- किनको?

जिज्ञासु- कृष्ण के भक्तों को तो हम तो सुधारना चाहते हैं। हम तो नफ़रत करते ही नहीं।

बाबा- हाँ, नहीं, कृष्ण के भक्तों को आप सुधारना चाहते हैं वो तो ठीक; लेकिन दूसरों को सुधारने से पहले हम सुधरे हुए हों या हम दूसरों को सुधार लेंगे?

जिज्ञासु- हम जितना सुधरे होंगे उतना तो सुधारेंगे।

बाबा- सवाल ही पैदा नहीं होता। हम तो ज्यादा बिगड़े हुए हैं, हम तो राजा क्वालिटी की आत्मायें हैं। राजा बननेवाली आत्माएँ ज्यादा पतित बनी हैं या रानियाँ बननेवाली आत्मायें ज़्यादा पतित बनी हैं? जो राजा बननेवाले हैं वो तो बहुत ज्यादा पतित बने हैं जन्मजन्मान्तर तो हम क्या उनको सुधारेंगे।

Time: 14.05-15.10

Student: Baba, the devotees of Krishna hate the devotees of Ram.

Baba: Both hate each other. (There is a saying) 'Devotees of Ram and men of Rahim, both are blind'.

Student: We want to reform them, don't we?

Baba: Whom?

Student: We want to reform the devotees of Krishna . We do not hate at all.

Baba: Yes, no. You want to reform the devotees of Krishna; that is ok. But before reforming others, should we ourselves be reformed or will we reform others?

Student: We can reform them to the extent that we have reformed ourselves.

Baba: That question does not arise at all. We are more spoilt. We are king-quality souls. Have the king-quality souls become more sinful or have the souls who become queens become more sinful? Those who are to become kings have become more sinful for many births; so, how can we reform them?

समयः 18.35-21.20

जिज्ञासुः- बाबा हर आत्मा अपने संकल्पों से सृष्टि रचती है।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- तो इस समय संगमयुग पर जैसे बांधेली मातायें हैं अगर कुछ झूठ बोलकर के और छुपा-छुपाकर घर-परिवार से कुछ यज्ञ में करती हैं तो संकल्प झूठ बोलने का और चोरी करने का हो गया ना।

बाबा- एक बात समझिये। हमारा किसी दुकान में साझेदारी है। कोई दुकान खोली और किसी व्यक्ति के साथ हमने भागीदारी कर ली, साझेदारी कर ली। है ना, दोंनो भागीदार हैं ना। लेकिन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

एक भागीदार इतना दबंग है कि सारा पैसा बटोर-बटोर के ले जाता है और दूसरा जो भागीदार है; लगाया तो उसने भी बराबर है लेकिन वो शरीर से कमजोर है, बिचारा कुछ कह नहीं सकता; तो क्या युक्ति नहीं अपनाना चाहिए?

Time: 18.35-21.20
Student: Baba, every soul creates its world through its thoughts.
Baba: Yes.
Student: So, now in the Confluence Age, there are mothers in bondages; if they speak lies and do some service in the yagya without the knowledge of the family, then they created thoughts of speaking lies and stealing, didn't they?
Baba: Understand one thing. Suppose we are running a shop in partnership; we opened a shop and we entered into a partnership with some person. Both are partners, aren't they? But one partner is such a bully (*dabang*) that he collects and takes with him all the money and the other partner… he has also invested an equal amount, but, he is physically weak; poor fellow, he cannot say anything; so, should he not adopt an idea?

जिज्ञासु- ये जो झूठ बोलना और....
बाबा- तो फिर वही बात। एक बात-उसका आधा हिस्सा है या नहीं?
जिज्ञासु- है।
बाबा- तो जो पत्नियाँ हैं उन पत्नियों का पति के कमाई पर आधा हिस्सा है या नहीं?
जिज्ञासु- है।
बाबा- जब हिस्सा उनका आधा है वो लेने के हकदार हैं या नहीं?
जिज्ञासु- हैं।
बाबा- लेकिन जो दबंग है वो नहीं दे रहा। तो पाप कौन रहा है?
जिज्ञासु- वो कर रहा है ना पाप ।
बाबा- वो पाप कर रहा है। जिसका हक है वो तो युक्ति से ले ले तो इसमें पाप काहे का बना।
जिज्ञासु- लेकिन संकल्प तो चला ना।
बाबा- क्यों संकल्प चला? ये तो तुम्हारी भावना है हमारे पतिदेवजी महाराज पति परमेश्वर है; हमने इनसे झूठ बोला।
Student: Speaking lies and.....
Baba: You are saying the same thing again. One thing, does he have half the share or not?
Student: He has.
Baba: So, do the wives have a claim to half of the income of the husbands or not?
Student: They have.
Baba: When they hold half the share, are they not entitled to obtain it or not?
Student: They are.
Baba: But the one who is a bully is not giving [it to them]; so who is committing sins?
Student: He is committing sins, isn't he?
Baba: He is committing sins. If someone tactfully obtains something to which he is entitled, then, why will he accumulate sins?
Student: But the thought (of stealing) was created, wasn't it?
Baba: Why did the thought arise? This is your feeling, 'my husband is God; I spoke lies to him'.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- ....

बाबा- अरे, मुरली में बाबा ने बोला है, शास्त्रों में भी बोला है पत्नि अर्धांगिनी होती है। अर्धांगिनी का मतलब पति की कमाई में आधा हिस्सा पत्नि का होता है। अगर पत्नि कमाई करे तो उसमें आधा हिस्सा पति का नहीं है। आज तो उल्टा हो रहा है पत्नि से कमाई भी करवाते हैं और सारी महीने भर की कमाई है वो सारी अपने एकाउंट में ड़ाल देते हैं।

जिज्ञासु- बाबा वो अपने जेब में भी नहीं ड़ालते तो उसका और ही कोई ले जाता है तो उसका क्या करे?

बाबा- तो ले ही जायेगा तुम दूसरों का हसड़ोगे तो दूसरा तुम्हारा ले जायेगा।

जिज्ञासु- बाबा, बच्चों की कमाई हो तो उसमें भी हक है क्या?

बाबा- बच्चों की जो कमाई, बच्चे अपनी स्वेच्छा से जो माँ-बाप को दे दें तो ले लेना चाहिए।

Student said something.
Baba: Arey, Baba has said in a Murli, it has also been said in the scriptures that a wife is half partner (*ardhangini*). *Ardhangini* means that a wife has half share in the husband's income. If a wife earns, a husband doesn't hold half share in it. Today the opposite is happening. They make the wives earn and put her entire month's income in their own account.
Student: Baba, they do not put it in their pockets; if someone else takes it away, then what should one do?
Baba: He will definitely take it away; when you usurp others' income, others will usurp yours.
Student: Baba, do we have a right in the income of the children?
Baba: If children give something from their income to the parents voluntarily, they should take it.

समयः 22.55-23.38

जिज्ञासुः- अभी तो बाप को देख रहे हैं हम लेकिन माँ तो दिखती नहीं है।

बाबा- हाँ, ये भी अपना-2 कर्मभोग पूर्वजन्मों का, क्या? कोई बच्चे ऐसे होते हैं कि जन्म लेते समय माँ मर जाती है।

जिज्ञासु- अभी हम लोंगो ने ब्रह्मा बाबा को नहीं देखा यानी माँ को नहीं देखा।

बाबा- चलो।

जिज्ञासु- तो क्या कुछ जन्मों में कुछ ऐसा हो सकता है कि जैसे....

बाबा– जो हिसाब-किताब है तभी तो नहीं हुआ। पूर्वजन्मों का अगर हिसाब-किताब नहीं है तो कैसे हो जायेगा?

Time: 22.55-23.38
Student: Now we are seeing the Father, but the Mother is not visible.
Baba: Yes, this is also one's own karmic suffering of the past births; what? There are some children whose mother dies at the time of birth.
Student: Now we have not seen Brahma Baba, i.e. the mother.
Baba: OK.
Student: So, can it happen like this in any birth.......
Baba: There is a karmic account; this is why it has happened so. If there is no karmic account of the past births, then how will it take place?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 23.40-25.55

जिज्ञासुः- बाबा अभी जो परिवार कोई ज्ञान में चल रहे हैं और ज्ञान में चलते हुए माँ भी ज्ञान में चल रही है, बेटा भी चल रहा है और जो बाप की प्रॉपर्टी होती है उसको बेटा बेचकर के और उसको यज्ञ सेवा में कर के तो माँ को भी उसका मिल सकता है?

बाबा:- माँ-बाप ज्ञान में नहीं चल रहे हैं?

जिज्ञासु:- नहीं। चल रहे हैं। माँ भी ज्ञान में चल रही है और बाप है नहीं तो जितनी सारी प्रॉपर्टी......

बाबा- माँ ज्ञान में चल रही है।

जिज्ञासु- हाँ, जी।

बाबा- और बच्चे भी ज्ञान में चल रहे हैं।

जिज्ञासु- हाँ, जी।

बाबा- माँ ने इतनी हिम्मत नहीं कर पाई कि प्रॉपर्टी बेचकर के ईश्वरीय सेवा में लगा सके।

जिज्ञासु- हाँ, जी।

बाबा- लेकिन बच्चों ने इतनी हिम्मत कर ली कि प्रॉपर्टी सारी ईश्वरीय सेवा में लगा दी। उसमें माँ की सहमति है या नहीं है? पहले तो ये देखा जाए कि सारी प्रॉपर्टी बेचकर के ईश्वरीय सेवा में लगा देने के लिए माँ की सहमति है या नहीं है? है, है या नहीं है?

जिज्ञासु- अगर है तो।

बाबा- अगर है तो माँ को भी उसको हिस्सा मिलेगा। अगर सहमति नहीं है और बच्चे ने फिर भी सारी प्रॉपर्टी ली और लगा दी तो हिस्सा तो कम हो जायेगा ना। मन्सा की पॉवर तो नहीं लगाई ना।

Time: 23.40-25.55

Student: Baba, suppose some family is following the knowledge, the mother as well as the son is following the knowledge and if the son sells the father's property and uses it in the service of the yagya, then will the mother also get a share in its fruits?

Baba: Are the parents not following the knowledge?

Student: No. They are following. The mother is also following and the father is not present. The entire property.....

Baba: The mother is following the path of knowledge.

Student: Yes.

Baba: And the children are also following the path of knowledge.

Student: Yes.

Baba: The mother could not gather the courage to sell the property and use it in service of God.

Student: Yes.

Baba: But the children showed the courage of using the entire property in service of God. Is there the consent of the mother in it or not? First it should be seen whether the mother has given her consent to sell the entire property and use it in the service of God or not? Is it there or not?

Student: If it is there?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: If it is there, then the mother will also get her share. If she has not given her consent, and still the son took the entire property and invested it (in service of God), then her share will decrease, will it not? She did not invest the power of her mind, did she?

जिज्ञासु- और अगर माँ ने बच्चों की सहमति से ही किया लेकिन लड़-झगड़ के?

बाबा- लड़ झगड़ के किया; माँ ने कर लिया साहस कर के और बच्चे कुछ नहीं कर सके।

जिज्ञासु- बच्चों को क्या फल मिलेगा?

बाबा- बच्चों को.... अगर बच्चों की सहमति नहीं है तो बच्चों को कोई फल मिलने वाला नहीं है क्योंकि सहमति नहीं है।

जिज्ञासु- नहीं मतलब राज़ी तो कर लिया।

बाबा- किसको?

जिज्ञासु- जैसे बच्चों को राज़ी कर लिया।

बाबा- राज़ी कर लिया । कोई-2 बच्चे भी ऐसे अच्छे सतोप्रधान होते हैं कि माँ-बाप की प्रॉपर्टी में अपना हक नहीं जमाते हैं - कहते हैं ये तो अम्मा की चीज़ है हमें इसमें हाथ नहीं, हम खुद कमायेंगे, खायेंगे। हम खुद कमायेंगे, खायेंगे। हम माँ की प्रॉपर्टी से हमें क्या लेना-देना। वो चाहे जो कुछ करें।

Student: And if the mother invested with the consent of the children after fighting with them?
Baba: She did it after fighting with them; the mother showed the courage while the children could not do anything.
Student: Will the children get its fruits?
Baba: The children.... if the children did not give their consent then they will not get any fruits because they haven't given their consent.
Student: No, I mean to say, she persuaded them.
Baba: Whom?
Student: She persuaded the children.
Baba: If she persuaded them, then it is a different issue. There are such nice and *satopradhan* children too who do not claim a right to the property of the parents. They say, this belongs to the mother. We will not lay a claim to it. We will earn ourselves and eat. We will earn ourselves and eat. We don't have anything to do with the mother's property. She can do whatever she wants.

समयः 25.58-30.40

जिज्ञासुः- कृष्ण से कृष्ण के माँ-बाप ज्यादा पॉवरफुल हैं।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- फिर दुनिया में तो कृष्ण का नाम बाला तो बहुत है और उनके माँ-बाप का नहीं है।

बाबा- वही तो कहा - सतयुग के कृष्ण का नाम बाला ज्यादा है या संगमयुग के कृष्ण का नाम बाला ज्यादा है? कौनसे कृष्ण का नाम बाला ज्यादा है?

जिज्ञासु- हम लक्ष्मी-नारायण को कहेंगे क्या?

बाबा- नर से नारायण जो बनने वाले लक्ष्मी-नारायण उनका नाम बाला है या जो नर से प्रिन्स बनते हैं, अगले जन्म में फिर प्रिन्स बन के फिर नारायण बनते हैं उनका नाम बाला ज्यादा है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- लक्ष्मी-नारायण का ज्यादा है।

बाबा- जो नर से नारायण बनते हैं संगमयुग में उनका नाम बाला ज्यादा है ना। तो संगमयुगी नारायण का नाम बाला है, संगमयुगी कृष्ण का नाम बाला है, संगमयुग में प्रजापिता का नाम बाला है, संगमयुग में शंकर का नाम बाला है - इन चारों नामों को नेक्सट टू गॉड़ बोला है।

Time: 25.58-30.40
Student: Krishna's parents are more powerful than Krishna.
Baba: Yes.
Student: But Krishna is very famous in the world while his parents are not.
Baba: That is what has been said, is the Krishna of the Golden Age more famous or is the Krishna of the Confluence Age more famous? Which Krishna is more famous?
Student: Can we say Lakshmi and Narayan?
Baba: Are the Lakshmi Narayan who become Narayan from a man (and Laxmi from a woman) more famous or is the one who first becomes a Prince from a man and then becomes Narayan in the next birth after becoming a prince, more famous?
Student: Lakshmi-Narayan is more famous.
Baba: The one who becomes Narayan from a man in the Confluence Age is more famous, isn't he? So, the Narayan of the Confluence Age is famous; the Krishna of the Confluence Age is famous; Prajapita's name is famous in the Confluence Age; Shankar's name is famous in the Confluence Age, all these four names have been mentioned as next to God.

जिज्ञासु- तो इन में से किसी को भी हम याद कर सकते हैं?

बाबा- एक ही तो है। उनके नाम अलग-2 दे दिये हैं।

जिज्ञासु- तो अलग-2 स्वरूप से भी याद कर सकते हैं?

बाबा- अलग-2 स्वरूप है ही नहीं। प्रैक्टिकल में तो एक ही तो रूप है ना। जो नारायण है, नर से नारायण बननेवाला है वही संगमयुगी कृष्ण है। जो संगमयुगी कृष्ण है वही शंकर का रूप है। जो शंकर का रूप है वही प्रजापिता का रूप है।

Student: So, can we remember any one of them?
Baba: All of them are one only. They have been given different names.
Student: So, can we remember in different forms?
Baba: They don't have different forms at all. In practical, there is only one form, isn't there? The one who is Narayan, the one who becomes Narayan from a man is the Krishna of the Confluence Age. The Krishna of the Confluence-Age is himself the form of Shankar.The form of Shankar himself is the form of Prajapita.

जिज्ञासु- ज्योति स्वरूप को याद नहीं कर के संगमयुगी नारायण को याद करे तो गलत हो जायेगा?

बाबा- ऐसे है भक्तिमार्ग में भगवान की पाँव की धूल भी मिल जाए तो भी बहुत अच्छा मानते हैं। कारण क्या है? कारण ये है कि संगमयुग में भगवान बाप जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करते हैं उसकी अगर मिट्टी भी हमारे पल्ले पड़ जाये तो भी बहुत बड़ी बात हो गई। मिट्टी माना शरीर रूपी पाँच तत्वों वाली मिट्टी। वो मिट्टी भी कोई साधारण चीज़ नहीं है। उसमें सुप्रीम सोल बाप आकर के सारी दुनिया को चेन्ज करता है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- वो तो करता है लेकिन लक्ष्मी–नारायण का जब प्रकाश का स्वरूप होता है; हाड़-मांस का शरीर तो होता नहीं....

बाबा- ये लो, ये विष्णु पार्टी घुस गई। घुस गई विष्णु पार्टी। जब हाड़-मांस का शरीर नहीं होगा तो हाड़-मांस का बच्चा कृष्ण कैसे पैदा हो जायेगा? जब हांड़-मांस का लक्ष्मी-नारायण का शरीर ही नहीं होगा उनकी काया जो है वो रोशनी वाली काया होगी तो उनके बच्चे राधा-कृष्ण वो हाड़-मांस के पैदा होंगे या रोशनीवाले पैदा होंगे?

Student: If we remember the Confluence Age Narayan instead of the point of light form, will it be wrong?

Baba: It is like this: in the path of bhakti, people consider it auspicious even if they get the dust of God's feet. What is the reason? The reason is that even if we get the soil of the permanent chariot in which God the Father enters in the Confluence Age, it is a very big thing. Soil means the soil like body made up of the five elements. Even that soil is not ordinary. The Supreme Soul Father comes in it and changes the entire world.

Student: He does that, but when Lakshmi and Narayan are in a light form, they do not have a body made up of bones and muscles...

Baba: Look, Vishnu Party has entered here. The Vishnu Party has intruded. When there is no body made up of bones and muscles, then how will child Krishna made up of bones and muscles be born? When there is no body of Lakshmi and Narayan made up of bones and muscles, if their body is a luminous body, then will their children Radha and Krishna be born with bones and muscles or with a body made up of light?

जिज्ञासु- नहीं, जैसे बाबा बताया ना अभी कि उनकी मिट्टी भी मिल जाये तो बहुत ......

बाबा- मिट्टी है ही नहीं। आपने तो मिट्टी खत्म कर दी। संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण की मिट्टी होती ही नहीं।

जिज्ञासु- नहीं, मुरली में कभी ऐसा आया है।

बाबा- मुरली में, कोई भी मुरली में ऐसा नहीं आया है कि नर से नारायण बनने वाले जो होते हैं....

जिज्ञासु- छोटे रूप को याद नहीं कर सको तो बड़े रूप को ....

बाबा- तो बड़े रूप को याद करो।

जिज्ञासु- बड़े रूप को याद नहीं कर सकते हो तो नारायण रूप के वो याद करो।

बाबा- वही तो बड़ा रूप है। छोटा रूप माना बिन्दु। नारायण की आत्मा भी तो बिंदु है; वो बिंदु रूप याद नहीं आता है तो बड़ा रूप याद करो। वो भी तो अविनाशी है कि विनाशी है? जब दुनिया का विनाश होगा तो जो सारे मनुष्य सृष्टि का बाप है वो पहले खत्म हो जायेगा कि बाद में खत्म होगा?

जिज्ञासु- बाद में।

बाबा- तो बाद में शरीर छोड़ेगा। उसको तो शरीर छोड़ते कोई देखेगा ही नहीं उस हिसाब से

जिज्ञासु- उसकी मिट्टी कैसे रहेगी। कोई देखेगा ही नहीं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु-शरीर वो छोड़ेगा कहा ऐसे बताया कृष्ण का जन्म हो जायेगा उनको पालना कर के फिर शरीर छोड़गे उनके माँ-बाप लक्ष्मी–नारायण।

बाबा- कहाँ जन्म देंगे? सतयुग में जन्म देंगे या संगम में जन्म देंगे? अरे, बुढियाँ को समझ लेने दो नहीं तो सब माताओं को .... करेगी।

Student: No, for example, Baba said that even if we get his soil, it is very.....
Baba: There is no soil at all. You finished the soil (by saying that deities do not have a body of bones and muscles). (You said that) The Confluence Age Lakshmi and Narayan do not have soil (i.e. body) at all.
Student: No, it has been mentioned like this in the Murli.
Baba: It has not been mentioned in any Murli that those who become Narayan from a man ...
Student: (Baba has said that) If you cannot remember the smaller form, remember the bigger form.
Baba: So, remember the bigger form.
Student: If you can't remember the bigger form, remember the form of Narayan.
Baba: That **is** the bigger form. Small form means point. Narayan's soul is also a point; if you cannot remember that point form, remember the bigger form. Is that also imperishable or perishable? When the destruction of the world takes place, will the father of the entire human world perish first or will he perish later?
Student: Later on.
Baba: So, he will leave his body later on. Nobody will see him leaving the body at all; that is why....
Student: How will his soil survive? Nobody will see him (dying) at all.
Student: Where will he leave the body... it has been said that Krishna will be born; his parents, i.e. Lakshmi and Narayan will sustain him and then leave the body.
Baba: Where will they give birth? Will they give birth in the Golden Age or in the Confluence Age? (Someone said something.) (Baba said jokingly) Arey, let the aged mother understand; otherwise she will… all other mothers.

समयः 31.24-34.15

जिज्ञासुः- मैं ये कह रही थी कृष्ण का जो जन्म हो जाता है।

बाबा- कब होता है सतयुग में या संगम में?

जिज्ञासु- सतयुग में होगा ना कृष्ण।

बाबा- सतयुग में कृष्ण... विनाश होने के बाद जब सतयुग आयेगा तब कृष्ण का जन्म होगा लेकिन किस से होगा?

जिज्ञासु- वही संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण से होगा।

बाबा- हाँ, जब विनाश होगा तो संगमयुगी जो लक्ष्मी-नारायण है उनके शरीर का विनाश होगा या नहीं होगा?

जिज्ञासु- यही तो मैं पूछ रही थी ना।

बाबा- हाँ, तो आपको कंचनकाया वाली बात बताई ना कि कुछ आत्मायें ऐसी है जो योगबल से अपने शरीर को सुरक्षित कर लेती है। उनका शरीर जो है वो बर्फ में सुरक्षित रहेगा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 31.24-34.15
Student: I was saying that when Krishna is born.
Baba: When is he born, in the Golden Age or in the Confluence Age?
Student: Krishna will be in the Golden Age;
Baba: Krishna will be [born] in the Golden Age... after the destruction when the Golden Age begins, then Krishna will be born, but from whom?
Student: From the Lakshmi Narayan of the Confluence Age.
Baba: Yes, when destruction takes place, will the bodies of the Lakshmi & Narayan of the Confluence Age be destroyed or not?
Student: This is what I was asking, wasn't I?
Baba: Yes. So you were told about *kanchankaya* that there are some souls who save their bodies with the power of yog. Their body will remain safe in ice.

जिज्ञासु- नहीं, वो मैं समझ गई। लेकिन कृष्ण जब बड़ी उम्र के हो जाते है, पालना हो जाती है फिर 150 वर्ष के बाद वो तभी तो शरीर छोंड़ेंगे लक्ष्मी–नारायण संगमयुगी ल.ना.।

बाबा- संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण शरीर छोड़ेगे तो।

जिज्ञासु- तो कृष्ण को बड़ा कर के, उनकी पालना कर के फिर सतयुग में 150 वर्ष उम्र पूरी कर के फिर शरीर छोड़गे क्या?

बाबा- ठीक है, जब ज्यादा योगी होंगे तो उनकी आयु भी लम्बी होगी। कृष्ण के मुकाबले उनके माँ-बाप की आयु लम्बी होगी या छोटी होगी?

जिज्ञासु- लम्बी होनी चाहिए।

Student: No, I understood that. But when Krishna grows up, when his sustenance is over, then after 150 years Lakshmi and Narayan, i.e. the Lakshmi and Narayan of the Confluence Age will leave their bodies.
Baba: The Lakshmi and Narayan of the Confluence Age will leave their bodies, so what?
Student: So, will they leave their body after they sustain Krishna till he grows up, after they sustain him and complete the age of 150 years in the Golden Age?
Baba: It is correct. When they are greater *yogis*, their age will also be more. When compared to Krishna will his parents live longer or lesser?
Student: They should live longer.

बाबा- कृष्ण बच्चा है और कृष्ण के माँ-बाप जो है वो उनके बाप है, रचयिता है तो रचयिता ज्यादा पॉवरफुल होता है या रचना ज्यादा पॉवरफुल होती है? रचयिता की आयु लम्बी होगी क्योंकि रचयिता ने सुप्रीम सोल बाप को पहचाना और उसके साकार स्वरूप को भी पहचाना। तो साकार में निराकार को याद करने वाला असली स्वरूप को याद किया ना इसलिए उनकी आयु बहुत् लम्बी हो जायेगी।

जिज्ञासु- बाबा तो फिर वो तो शरीर छोड़ेंगे है ही।

बाबा- कौन?

जिज्ञासु- सतयुग के नर-लक्ष्मी नारायण होंगे ना।

बाबा- सतयुग के लक्ष्मी-नारायण नहीं, संगमयुग के नर–नारायण होते है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- हाँ, संगमयुग के नर नारायण होते है ना वो जो कृष्ण को जन्म देंगे तो जैसे शंकर भगवान को किसी ने देख ही नहीं शरीर छोड़ते हुए।

बाबा- अरे, नारायण कहो चाहे शंकर कहो बात एक ही है।

जिज्ञासु- वैसे वो भी शरीर तो नहीं छोड़ेंगे, देखेंगे नहीं।

बाबा- वो आत्मिक स्मृति में इतने ज्यादा परमधाम की याद में लीन हो जायेंगे, एकाग्र हो जायेंगे कि उनकी आत्मा 500 करोड़ मनुष्यात्माओं के मुकाबले पहले परमधाम में पहुँच जायेंगी। शरीर यहाँ का यहीं बर्फ में दबा रह जायेगा, सुरक्षित रहेगा। जो आत्मा पहले परमधाम में जायेगी वो आत्मा पहले इस सृष्टि पर आवेगी। जब पहले आवेंगी तो उसी शरीर में प्रवेश करेगी।

Baba: Krishna is a child and Krishna's parents are his father, creator; so, is a creator more powerful or the creation more powerful? The age of the creator will be more because the creator recognized the Supreme Soul Father and also recognized his corporeal form. So, by remembering the incorporeal within the corporeal, he remembered the true form, didn't he? … therefore they (L.N.) will live longer.

Student: Baba, then they will leave their bodies, will they not?

Baba: Who?

Student: The Lakshmi Narayan of the Golden Age.........

Baba: It is not the Lakshmi Narayan of the Golden Age, but the Lakshmi Narayan of the Confluence Age who become Narayan from man.

Student: Yes. The man of Confluence Age will become Narayan. So, when they give birth to Krishna; for example, nobody saw Shankar Bhagwan leave his body.

Baba: Arey, call him Narayan or Shankar, it is one and the same.

Student: Similarly he will also not be seen leaving his body.

Baba: He will become immersed in the remembrance of the Supreme Abode in a soul conscious stage so much, he will be so focussed that his soul will reach the Supreme Abode before the other 5 billion human souls. The body will remain buried under ice here itself, it will remain safe . The soul that goes to the Supreme Abode first will come to this world first. When it comes first, it will enter the same body.

समयः 34.16-37.29

जिज्ञासुः- बाबा जैसे अभी आपने बोला कि शंकर कहो, नारायण कहो बात वही है।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- और प्रजापिता कहो तो।

बाबा- प्रजापिता जो है जब साकारी स्टेज में हैं, पतित है, पतित कर्म करने वाला है तब है प्रजापिता। क्या? साकारी, आकारी, निराकारी। शिव भगवान क्या है? सिर्फ निराकारी। ब्रहमा की आत्मा क्या है? आकारी है, साकारी नहीं और प्रजापिता साकारी है। एक ही शरीर है लेकिन पार्ट तीन प्रकार के हैं।

Time: 34.16-37.29

Student: Baba, you said just now that whether we call him Shankar or Narayan it is one and the same.

Baba: Yes.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: And if we call him Prajapita.

Baba: Prajapita, when he is in a corporeal stage, when he is sinful, when he is the one who performs sinful actions, he is Prajapita. What? Corporeal, subtle and incorporeal. What is God Shiv? Just incorporeal. What is Brahma's soul? He is subtle, not corporeal; and Prajapita is corporeal. The body is only one, but the parts are of three kinds.

जिज्ञासु- यानी प्रजापिता भी मेंशिव सुप्रीम सोल की प्रवेशता कहेंगे?
बाबा- पतित तन में ही तो सुप्रीम सोल प्रवेश करता है। पतित तन में जो सुप्रीम सोल प्रवेश करता है तो इन्द्रियाँ पतित है या पावन है? इन्द्रियाँ तो पतित हैं लेकिन सुप्रीम सोल ने कंट्रोल किया हुआ है रथ को। भगवान को अर्जुन का रथ कन्ट्रोल करने वाला दिखाते है ना। तो उस रथ को, इन्द्रियों को कन्ट्रोल किया हुआ है। तो जब इन्द्रियाँ कन्ट्रोल कि हुई है तो उनका जो रिजल्ट आना चाहिए इन्द्रियों का वो रिजल्ट वैसा ही आयेगा जैसे मनुष्यों का आता है या कुछ अजूबा-गरूबा होगा?
जिज्ञासु- पॉवरफुल होगा।
Student: Does it mean the Supreme Soul Shiv enters Prajapita as well?
Baba: Supreme Soul enters a sinful body itself. When the Supreme Soul enters a sinful body, are the bodily organs sinful or pure? The bodily organs are sinful, but the Supreme Soul has controlled that chariot. God is shown to be controlling the chariot of Arjun, isn't He? So, He has controlled that chariot, the bodily organs. So, when the bodily organs have been controlled, then will the result of those organs be same as that of other human beings or will there be something amazing?
Student: it will be powerful.

बाबा- पॉवरफुल रिजल्ट होगा ना। मनुष्य जो हैं जब अपनी पतित इन्द्रियों के साथ संग का रंग करते हैं, संबंध जोड़ते हैं तो बच्चे की पैदाईश हो जाती है। कितना भी रोकना चाहें, दवाईयों से रोकना चाहें , इन्जेक्शन से रोकना चाहें कैसा भी....वो छुप नहीं सकता, रह नहीं सकता और भगवान? भगवान उसी तन में, पतित तन में प्रवेश करता है, इन्द्रियों को कन्ट्रोल करता है जो रिजल्ट आना चाहिए दुनिया की तरह वो नहीं आता। क्यों नहीं आया? क्योंकि जिस तन में प्रवेश किया वो तन अमोघवीर्य वाला संसार में साबित हो जाता है। पतित तन में और पावन तन में बहुत अंतर है। ऐसे नहीं कि शिव की आत्मा पार्ट नहीं बजाती, ऐसे नहीं कि कृष्ण की आत्मा पार्ट नहीं बजाती, ऐसे भी नहीं कि राम वाली आत्मा, प्रजापिता वाली, राम बाप वाली आत्मा पार्ट नहीं बजाती; तीनों ही आत्मायें अपने-अपने टाईम पर पार्ट बजाने वाली है। राम-कृष्ण की आत्माओं को भी संग का रंग लगता है। जैसे और धर्मपिताओं को संग का रंग लगता है वैसे राम-कृष्ण की आत्माओं को भी... भल उनमें भगवान प्रवेश करता है। परंतु उनको भी संग का रंग लगता है लेकिन अंतर क्या पड़ता है? उनमें शिव भगवान प्रवेश है; इसलिए प्रवेश होते ही संग का रंग जल्दी धुल जाता।
Baba: The result will be powerful, will it not? When human beings keep the company and establish relationship with their sinful organs, children are born. Howevermuch they may try to stop, they may try to prevent (conception) with the help of medicines or through injection, they

may try to prevent it anyhow... it cannot remain hidden, it cannot be stopped and God? He enters the same body, the same sinful body, and controls the organs and we don't see the result like the one observed in the world. Why does it not happen? It is because the body in which He enters proves to be *amoghveerya* (one whose energy does not fall) in the world. There is a lot of difference between a sinful body and a pure body. It is not that Shiv's soul does not play a part; it is not that the soul of Krishna does not play a part. It is not that the soul of Ram, the soul of Prajapita or the soul of Father Ram does not play a part either; all the three souls play their part at their designated times. The souls of Ram and Krishna are also coloured by the company. Just as other religious fathers are coloured by the company, the souls of Ram and Krishna..... although God enters them. But they too are coloured by the company, but what is the difference? God Shiv has entered them; this is why the colour of company is washed-off as soon as He enters.
It is shed-off as soon as He enters.

समयः 37.30-38.40

जिज्ञासुः बाबा नारायण को याद करने का तात्पर्य क्या है?

बाबा- नारायण को याद करने का मतलब.... नारायण संपूर्ण होता है कि अपूर्ण होता है?

जिज्ञासु- संपूर्ण।

बाबा- और सभी देवताओं की ग्लानि है लेकिन नारायण की कोई ग्लानि नहीं। माना नारायण संपूर्ण है। शंकर है माना मिक्स है। शंकर माना चंद्रमा भी है, कृष्ण की आत्मा भी है, शिव की आत्मा भी है - तीसरे नेत्र के रूप में, रामवाली आत्मा भी है। तीनों का संकरण है माना शंकर है। तो शंकर है याद में बैठा हुआ। याद में बैठा हुआ है इसका मतलब क्या हुआ? अपूर्ण है या संपूर्ण है? अपूर्ण है तब तो याद में बैठा है। तो नारायण जो है वो संपूर्ण है, स्टेज है।

जिज्ञासु- संगम जो प्रैक्टिकल में अभी है.....

बाबा- अभी है नारायण?

जिज्ञासु- नहीं, अभी जो प्रैक्टिकल में पार्ट बजाए रहे है।

बाबा- अभी प्रैक्टिकल में नारायण संपूर्ण बन गया? संपूर्ण है?

जिज्ञासु- नहीं।

बाबा- अरे, सन् 76 में नारायण का जन्म हुआ ये बोला लेकिन वो नर नारायण की स्टेज में संपूर्ण हो गया; ये तो नहीं बोला।

Time: 37.30-38.40
Student: Baba, what is meant by rememebering Narayan?
Baba: Remembering Narayan means... is Narayan complete or incomplete?
Student: Complete.
Baba: All other deities have been defamed, but Narayan has not been defamed. It means that Narayan is complete. When he is Shankar, it means that he is mix. Shankar means that there is also the Moon, i.e. the soul of Krishna, there is also the soul of Shiva in the form of the third eye; there is also the soul of Ram. If there is a mixture of all the three it means that he is Shankar. So, Shankar is sitting in remembrance. What is meant by sitting in remembrance? Is he incomplete or complete? He is incomplete; only then is he sitting in remembrance. So, Narayan is a complete stage.
Student: [In the] Confluence Age, which is in practical now......

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Is he Narayan now?
Student: No, the practical part that he is playing now.
Baba: Has he become complete Narayan in practical now? Is he complete?
Student: No.
Baba: Arey, it has been said that Narayan was born in the year (19)76. But it has not been said that he became complete in the stage of Nar-Narayan.

समयः 38.41-39.30

जिज्ञासुः- अभी जब शंकर तो हमेशा याद में रहता है तब फिर वो बोलते समय कौन आत्मा बोलती है? याद में रहता है तो फिर बोल नहीं सकता।

बाबा- एक मुरली में बोला है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। अभी ब्रह्मा तो बैठा हुआ है शंकर और विष्णु कहाँ है? माना उस समय जिस समय मुरली चलाई जा रही थी उस समय शंकर और विष्णु तो प्रत्यक्ष थे ही नहीं। फिर बोला ये तीनों मूर्तियाँ गूँगी हैं क्या? शंकर बोलते हैं? बोलते हैं कि नहीं बोलते? विष्णु बोलते हैं या गूँगे हैं?

जिज्ञासु- इसका मतलब बोलते........, नहीं, समय-समय के ऊपर कभी वो बोल, कभी वो बोले।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- तीनों में से कोई बोलता........।

Time: 38.41-39.30
Student: Now when Shankar always remains in remembrance, which soul speaks when he speaks? He cannot speak if he remains in remembrance.
Baba: It has been said in a Murli, "Brahma, Vishnu, Shankar. Now Brahma is sitting; where are Shankar and Vishnu?" It means that when the Murli was being narrated, Shankar and Vishnu were not revealed at all. Then it was said, "Are these three personalities dumb?" Does Shankar speak? Does he speak or not? Does Vishnu speak or is he dumb?
Student: It means he does speaks; sometimes he [Shankar] speaks, sometimes he [Brahma] speaks...
Baba: Yes.
Student: One of the three speaks.....

समयः 39.35-45.40

जिज्ञासुः- अच्छा, बाबा जब लक्ष्मी-नारायण बन जाते हैं प्रजापिता।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- तो अभी प्रजापिता में तो शिवबाबा प्रवेश करते हैं तो फिर लक्ष्मी–नारायण में प्रवेश करेंगे क्या?

बाबा- जिस समय प्रजापिता है तो उस समय शिव प्रवेश कर के वाणी बोलेगा या कर्म करेगा। क्या? संग का रंग लगेगा और लगायेगा; वो शिव का काम है। लेकिन जब प्रजापिता वाली आत्मा सम्पन्न स्टेज का पार्ट बजायेगी। क्या? सम्पन्न स्टेज माना निर्विकारी स्टेज। तो वो नारायण कही जाती है उस समय। मान लो सन् 18, 18 के बाद कृष्ण का, जो संगमयुगी कृष्ण है वो संपूर्ण कहा जायेगा या अपूर्ण कहा जायेगा? संपूर्ण हुआ ना। जन्म हो गया ना। द्विजन्मा हो गया ना, पक्का ब्राह्मण हो गया ना। तो जो पक्का ब्राह्मण है कृष्ण वो देवताओं के

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

मुकाबले; जो सतयुग में देवतायें जन्म लेंगे राधा-कृष्ण उनके मुकाबले ऊँची स्टेज वाला है या नीची स्टेज वाला है? ऊँची स्टेज वाला। कैसी ऊँची स्टेज वाला है? राधा-कृष्ण जो है वो फिर भी एक-दूसरे को देख रहे है दृष्टि से। उनका दृष्टि से कनेक्शन है, स्थूल इन्द्रियों का कनेक्शन है लेकिन लक्ष्मी-नारायण का स्थूल इन्द्रियों मात्र से भी कनेक्शन की उनको दरकार ही नहीं, देहभान का नाम-निशान भी नहीं। मन के वायब्रेशन से ही वो प्रसन्न रहेंगे कि लक्ष्मी हमारे नजदीक है।

Time: 39.35-45.40
Student: OK Baba, when Prajapita becomes Lakshmi-Narayan.
Baba: Yes.
Student: So, now Shivbaba enters Prajapita; so then will He enter Lakshmi-Narayan?
Baba: When he is Prajapita, Shiva will enter and either speak or act. What? Colour of the company will be applied and caused to be applied; that is Shiv's task. But when Prajapita's soul will play the part of perfect stage; what? Perfect stage means the stage without vice. So, he is called Narayan at that time. Suppose it is the year (20)18, after (20)18, will Krishna, the Krishna of the Confluence Age be called complete or incomplete? He is complete, isn't he? He was born, wasn't he? He became *dwijanma* (twice born); he became a firm Brahmin, didn't he? So, the one who is a firm Brahmin i.e. Krishna; is that Krishna in a higher or a lower stage when compared to the deities, i.e., Radha and Krishna who are born in the Golden Age? He is in a higher stage. What kind of a higher stage does he have? Radha and Krishna (of the Golden Age) are still seeing each other through eyes. They have connection of vision. They have a connection of physical organs. But Lakshmi and Narayan do not need connection even through the physical organs. There is no name or trace of body consciousness at all. He will remain happy just through the vibrations of the mind [thinking] that Lakshmi is near him.

जिज्ञासु- तो बाबा लक्ष्मी-नारायण जब संपूर्ण बन जायेंगे उस समय हम भी बन जायेंगे क्या? उस समय हम भी बन जायेंगे...........

बाबा- सभी बच्चे नम्बरवार जो आत्मिक स्थिति में टिकने वाले हैं वो नम्बरवार बनेंगे। नम्बरवार नजदीक भी पहुँचेंगे।

जिज्ञासु- 2018 में क्या लक्ष्मी-नारायण बनेंगे?

बाबा- लक्ष्मी-नारायण जो है वो सम्पन्न स्टेज का नाम है। अपनी भारतीय परम्परा में ब्राह्मण का जब जन्म होता है तो उसे पक्का ब्राह्मण नहीं कहा जाता। कब कहा जाता है? जब उसका यज्ञोपवीत होता है तो पक्का ब्राह्मण कहा जाता है। शादी पहले हो जाये ब्राह्मण की और यज्ञोपवीत बाद में हो ऐसे होता है क्या? नहीं होता। पहले क्या करना है? पहले यज्ञोपवीत धारण करे माने तीन मूर्तियों का जो धंधा है, आक्यूपेशन है वो अच्छी तरह बुद्धि में बैठ जाये। ब्रह्मा का सूत्र क्या है, विष्णु का सूत्र क्या है, शंकर का सूत्र क्या है और तीनों सूत्र मिलकर के कैसे ब्रह्म फाँस बनती है, कैसे नई दुनिया के निर्माण के लिए तीनों मूर्तियाँ निमित्त बनती है? वो सारा ही ज्ञान जब बुद्धि में बैठ जाये तब कहते हैं यज्ञोपवीत धारणकर्ता पक्का ब्राह्मण। तो वो स्टेज तो सम्पन्न स्टेज हो जायेगी ना।

जिज्ञासु- 2018 में।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- हाँ, 2018 जो सम्पन्न स्टेज होगी उस सम्पन्न स्टेज में संगमयुगी कृष्ण प्रत्यक्ष होगा या नहीं होगा? संगमयुगी कृष्ण प्रत्यक्ष हो जायेगा। माना उसका जन्म हो गया। प्रत्यक्ष होना ही माना जन्म होना। अभी तक गुप्त था। कभी किसी को संशय आये है कही ना है? है या नहीं है? निश्चय-अनिश्चय दोंनो आती है। लेकिन जब सारी बात क्लीयर हो जाये संसार के सामने तो प्रत्यक्ष हो गया।

Student: So, Baba, when Lakshmi and Narayan become complete, will we also become (complete)? At that time we will also become.....
Baba: All the children who are according to their rank, who become constant in the soul conscious stage will also become (complete) according to their capacity.
Student: Will they become Lakshmi and Narayan in 2018?
Baba: Lakshmi and Narayan is the name of the perfect stage. In our Indian tradition, when a Brahmin is born, he is not called a perfect Brahmin. When is he called (a perfect Brahmin)? When he undergoes the thread ceremony (*yagyopavit*) he is called a perfect Brahmin. Does it ever happen like this that a Brahmin gets married first and undergoes thread ceremony later? It does not happen like this. What should be done first? First he should wear the *yagyopavit* (the sacred thread), i.e. the occupation of the three personalities should sit in the intellect nicely. What is the thread of Brahma, what is the thread of Vishnu, what is the thread of Shankar and how is the *Brahm-faans* (the knot of Brahma) formed when all the three threads meet, how the three personalities become insturments in establishing the new world. When that entire knowledge sits in the intellect, then he is called the perfect Brahmin wearing the *yagyopavit*. So, that stage will be a perfect stage, will it not?
Student: In 2018.
Baba: Yes. When the perfect stage is achieved in 2018, will the Krishna of the Confluence Age be revealed in that perfect stage or not? The Confluence Age Krishna will be revealed. Meaning he was born. . Revelation means birth. Until now he was hidden. Someone may have a doubt is he there or not? Is he or is he not (the Confluence Age Krishna)? They develop faith as well as doubts. But when the entire thing becomes clear before the world, he is revealed.

जिज्ञासु- वो तो बाबा, आपके साथ रखना...

बाबा- बच्चे नम्बरवार है या एक जैसे हैं?

जिज्ञासु- नम्बरवार है ।

Student: Baba, we have to keep that with you.....
Baba: Are the children numberwise or alike?
Student: Numberwise.

जिज्ञासु- बाबा मुरली में बोला है सबसे अच्छा पुरूषार्थ है नारायण को याद करना। तो नारायण अभी क्या सम्पन्न नहीं है तो फिर।

बाबा- अभी के नारायण को क्यों याद करो। ये तो जानते हो सम्पन्न नारायण क्या होगा?

जिज्ञासु- वो देखा ही नहीं तो।

बाबा- देखा ही नहीं..., ब्रह्मा को तुमने देखा?

जिज्ञासु- ....

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- तो फिर ब्रह्मा याद नहीं आता कभी? गाँधीजी को नहीं देखा जिन्होंने तो उनको गाँधी जी नहीं याद आते?

जिज्ञासु- आते।

बाबा- आते हैं। ऐसे ही ये तो हम जानते हैं कि नारायण ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी शास्त्रों में भी कोई ग्लानि नहीं, दुनिया में भी कोई ग्लानि नहीं। नारायण जो है एकदम सम्पन्न स्टेज वाली मूर्ति है और चैतन्य मूर्ति है।

Student: Baba, it has been said in a Murli that the best *purusharth* (spiritual effort) is to remember Narayan; so, if Narayan is not perfect now, then....
Baba: Why do you remember the present Narayan? You know who will be the perfect Narayan.
Student: We have not seen him at all.
Baba: You have not seen at all.... Have you seen Brahma?
Student said something.
Baba: Then don't you ever remember Brahma? Do those who haven't seen Gandhiji remember Gandhiji or not?
Student: They do.
Baba: They do. Similarly, we know that Narayan is such a personality who has not been defamed either in any scripture or in the world. Narayan is the completely perfect personality and is a living personality.

जिज्ञासु- तो अभी प्रैक्टिकल में जो पार्ट है उसी स्वरूप को याद करना है ना नारायण को।

बाबा- अभी प्रैक्टिकल में है?

जिज्ञासु- अभी कहाँ है। स्वरूप को याद करने का....

बाबा- जो प्रैक्टिकल में निर्विकारी होगा उसकी पहचान क्या होगी? जो प्रैक्टिकल में इस समय निर्विकारी होगा उसकी पहचान क्या होगी? कुछ पहचान होगी कि नहीं होगी?

जिज्ञासु- निराकारी स्टेज।

बाबा- हाँ, निराकारी स्टेज तो होगी। वो भी हो गया। इब्राहिम, बुद्ध, क्राईस्ट की भी निराकारी स्टेज थी। थी ना? निराकारी स्टेज होगी ये ठीक है। लेकिन जो निराकारी स्टेज हुई उसका रिजल्ट क्या होगा? रिजल्ट ये होगा कि जो भी सम्पर्क-संसर्ग में आवेगा कनवर्ट हो जावेगा, निश्चय बुद्धि हो जावेगा।

जिज्ञासु- पारस पत्थर का.......

बाबा- पारसनाथ का जो मिसाल है।

Student: So, we have to remember the form of Narayan who is playing a practical part now.
Baba: Is he present in practical now?
Student: He is not present now. Remembering the form....
Baba: What will be the indication of the one who is *vice less* in practical? What will be the indication of the one who is vice less in practical now? Will there be any indication or not?
Student: Incorporeal stage.
Baba: Yes, he will have an incorporeal stage. That is ok. Abraham, Buddha, Christ also had an incorporeal stage. They had, didn't they? It is correct that he will have an incorporeal stage. But what will be the result of that incorporeal stage? The result will be that whoever comes in his contact and connection will *convert* (transform), he will become the one with a faithful intellect.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Like the *Paraspatthar* (philosopher's stone[1]).
Baba: Like the example of Parasnath.

समयः 45.41-47.32

जिज्ञासुः- बाबा ऐसे सुनने में आया कि बहुत से बच्चे है जो एड़वांस के बेसिक में जा रहे है।
बाबा- एड़वान्स वाले।
जिज्ञासु- हाँ,
बाबा- एड़वान्स वाले बेसिक में जा रहे है सो क्या हुआ? ऐसे बहुत से हैं जो बाप के बच्चे बनते हैं और बाप के बच्चे बनने के बाद जो जिस धर्म का होता है वो उसी धर्म में चला जाता है। इसका एक मिसाल दिया है मुरली में - मान लो कोई पिछले जन्म की वैश्या है और इस जन्म में ब्राह्मण बन गई तो पुरूषार्थ करते-2 आखरीन उसका रिजल्ट क्या आवेगा? आखरीन वैश्या वृत्ति के तरफ चली जावेगी। तो जो दूसरे धर्म में कनवर्ट हो गये पिछले जन्मों में, 63 जन्म में वो यहाँ भले ब्राह्मण बन जाये, ब्राह्मण बन जायेंगे तो भी वो कनवर्ट हो जावेंगे। जैसे जगदीश भाई थे। आखिरी जन्म में कौनसे धर्म के थे? आर्यसमाजी थे। थे ना? इस ईश्वरीय ज्ञान की सबसे ज्यादा ग्लानि कौनसे धर्म वालों ने की है? आर्यसमाजियों ने बेसिक में भी की। एडवान्स में भी सबसे ज्यादा ग्लानि करने के निमित्त कौन बना? वही जगदीश भाई। उन्होने ट्रेनिंग दी कन्याओं को कि एड़वान्स पार्टी वालों को ऐसे-2 जवाब दो, इस तरह की बातें आती है तो उनका ऐसा उल्टा जवाब दो, इस तरह की बात करते हैं तो वैसा उल्टा जवाब दो। ताना-वाना बुद्धि में घुमाते-2 बुद्धि में ट्यूमर हो गया। खेल खलास।

Time: 45.41-47.32
Student: Baba, we have heard that many children of the Advance (party) are going to basic (i.e. BKWSU).
Baba: Is it those who follow the advance (knowledge)?
Student: Yes.
Baba: What happened if those who follow the advance (knowledge) are going to basic? There are many, who become the Father's children and after becoming the Father's children, whoever belongs to whichever religion goes to that religion. An example for this has been given in the Murli, "suppose someone has been a prostitute in the past birth and has become a Brahmin in this birth, then while making *purusharth* (spiritual effort) ultimately what will be the result? Ultimately she will move towards prostitution. So, those who converted to other religions in the past births, in 63 births; they may become Brahmins here; even if they become Brahmins they will convert. For example, there was Jagdish bhai; to which religion did he belong in the last birth? He was an Arya Samaji. He was (an Arya Samaji), wasn't he? The people of which religion have defamed this Godly knowledge the most? The Arya Samajis have defamed (the Godly knowledge) in the basic (knowledge) also. Even in the advance (knowledge), who became an instrument in causing the most defamation? The same Jagdish bhai. He gave training to the (BK) sisters: give reply to the people of advance party like this; if you face such issues, give them an opposite reply in this way; if they speak like this, give them a reply like that. While weaving a network of such thoughts he developd a tumor in his brain. The drama ended.

---
[1] Believed to transform whatever it touches into gold.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 47.54-50.05

जिज्ञासुः- बाबा, जैसे अभी किसी ने कोर्स कर लिया और वो समय के हिसाब से समझो कैसे भी आ नहीं पाते हैं तो उनको क्या हम ये ज्ञान वाली कैसेट दे सकते है? समझाने के लिए ।

बाबा- कैसटें और वी.सी.डीस. कोई-2 ऐसी हैं जो जनरल पब्लिक की हैं। तो वो 10-20-25 कैसटें जो हैं उनमें से कोई कैसट उनको दे सकते हैं। दें फिर वापस लें , दें फिर वापस लें।

जिज्ञासु- अगर वो नहीं चलते हैं ....अगर नहीं समझते हैं तो समझायेंगे।

बाबा- समझे तो भी अच्छा, नहीं समझे तो भी देने में कोई हर्जा नहीं है।

जिज्ञासु- उद्देश्य तो हमारा यही है कि भई मतलब कैसे भी उनको कम से कम बाप का परिचय तो मिले ना।

बाबा- हाँ, जी। कोर्स देने का मतलब ही है कि फोर्स आ जाये। बाप की पहचान का फोर्स आ जाये नहीं तो कोर्स ही कोर्स नहीं।

Time: 47.54-50.05

Student: Baba, for example, if someone undergoes the course now and suppose he is not able to come; wether it is due to time or due to some other problem, so, can we give the cassettes containing this knowledge for the sake of explanation?

Baba: There are some cassettes and VCDs which are for the general public. So, there are 10-20-25 cassettes; you can give any one of those cassettes to them. Give it and then take it back (after they have listened to it). Give it and take it back.

Student: If they do not follow…….if they do not understand, we will explain to them.

Baba: It is good if they understand. There is no harm in giving even if they do not understand.

Student: Our aim is that in whatever way possible they should at least get the introduction of the Father.

Baba: Yes. The meaning of giving course is that they should get force. They should get the force of recognising the Father. Otherwise, that course is not a course.

जिज्ञासु- जैसे बहुत सी कैसेटे हैं जो भक्ति के हिसाब से भी हैं मुरलियाँ तो भक्ति वालों को भी अपन मतलब बता सकते हैं क्या?

बाबा- वो ही जनरल कैसेट। भक्ति वालों को भी सुनायेंगे तो भी उनकी बुद्धि में बैठेगा।

जिज्ञासु- ...उनको ऐसे समझाया हुआ तो है लेकिन भई परिस्थिति वश बहुत से आ नहीं पाते।

बाबा- कैसेट और वी.सी.डी. या डी.वी.डी. ये भी एक तरह का लिट्रेचर है और लिट्रेचर के लिए मुरली में ड़ायरेक्शन है कि किसी को बिना सुनाये, समझाये किसी को लिट्रेचर नहीं देना चाहिए। देने से कोई फायदा नहीं होगा। ऐसे ही फाड़ के फेंक देगा, तोड़ देगा। थोड़ा समझाना चाहिए। समझते-2 वो सिर हिलाने लगे- हाँ, आपकी बात ठीक है फिर उसको लिट्रेचर देने से फायदा है।

Student: Baba, for example, there are many cassettes and Murlis from the point of view of *bhakti* (devotion). So, can we explain the meanings to those who follow *bhakti*?

Baba: The same general cassettes. It will sit in the intellect of those who follow bhakti as well, if you narrate to them.

Student: … they have been explained, but due to circumstances they are unable to come.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Cassettes, VCDs and DVDs are also a kind of literature, and in the case of literature, there is a direction in the Murlis that nobody should be given literature without narrating or explaining to them. There will be no use of giving (it if you do not explain to them before that). He will simply tear it and throw it away or break it. You should explain a little. If they start nodding their heads while understanding [and starts saying], "yes, whatever you say is correct", then there is benefit in giving them literature.

समयः 50.07-52.20

जिज्ञासुः- बाबा जैसे अभी कहा कि साढ़े चार लाख के अंदर साढ़े चार प्रवेश कर के पार्ट बजाते हैं तो वो अपने को ऐसे कैसे मालूम कैसे चले कि हाँ इनमें प्रवेश है?

बाबा- अव्यक्त वाणी में बताया तो है एक तो होता है सूक्ष्म शरीर से प्रवेश और एक होता है जिस आत्मा में प्रवेश हो रहा है वो आत्मा बीजरूपी स्टेज वाली है तो उसके संग के रंग में आकर के तो प्रवेश करने वाली की भी बीजरूपी स्टेज बन जाती है। तो पता नहीं चलेगा कौन कर रहा, कौन बोल रहा है ज्ञान की दृष्टि से...

Time: 50.07-52.20

Student: Baba, it has been said just now that four fifty thousand souls enter in four fifty thousand (persons) and play their parts; so, how will we know that a soul has entered them?

Baba: It has been said in an Avyakta Vani that one kind of entering is through the subtle body and one kind of entering is that the soul in whose body another soul is entering, if that soul is in a seed-form stage, then the soul that enters also attains a seed form stage after being coloured by his company. So, you will not know who is doing [what], who is speaking, from the point of view of knowledge……

जिज्ञासु- पुरूषार्थ अच्छा चलने लग गया।

बाबा- ज्ञान की दृष्टि से पता चलेगा कि ये इस आत्मा का पार्ट है और वो उस आत्मा का पार्ट है। जैसे राम वाली आत्मा है, राम वाली आत्मा में शिव का भी प्रवेश है और कृष्ण की सोल का भी प्रवेश है। अब मुरली की व्याख्या कौन देता है, क्या समझेंगे? मुरली की जो नई-2 व्याख्या निकल रही है जो पहले कभी सुनी ही नहीं; वो कौन दे रहा है? शिव दे रहा है। व्याख्या तो शिव दे रहा है लेकिन फिर मुरली कौन पढ़ रहा है? कृष्ण की सोल पढ़ रही है। शिवबाप को पढ़ने की दरकार नहीं और कृष्ण जो है वो व्याख्या कर नहीं सकता; वो मुरली पढ़ता है, पढ़कर के सुना सकता है बस। उसकी भी अभी पढ़ाई चल रही है। राम वाली आत्मा तमोप्रधान है। जैसे हम बच्चे तमोप्रधान है। तमोप्रधान आत्मा क्या करेगी? तमोप्रधान काम करने की उसको रग लगी रहेगी या सतोप्रधान काम करेगी? अरे, तमोप्रधान आत्मा क्या करेगी? तमोप्रधान आत्मा को तमोप्रधानता की रग लगी रहेगी।

जिज्ञासु- शिव सुप्रीम सोल प्रवेश है तो उसको...

बाबा- हाँ, वो कन्ट्रोल कर लेता है वो बात दूसरी है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: He will start making good spiritual efforts.
Baba: From the point of view of the knowledge you will know that this is the part of this soul and this is the part of that soul. For example, the soul of Ram; the soul of Shiv as well as the soul of Krishna are present in Ram. Well, who gives the explanation of the Murlis? What do you understand? Who is giving the new clarifications of the Murlis which you had not heard earlier at all? Shiv is giving (those new clarifications). Shiv is giving the clarifications, but who is reading the Murlis? The soul of Krishna is reading (the Murlis). There is no need for the Father Shiv to read (the murli) and Krishna cannot give clarifications. He reads the Murli; he can just read and narrate. That is all. He too is studying at present. The soul of Ram is *tamopradhan* (dominated by darkness and ignorance), just as we children are *tamopradhan*. What will a *tamopradhan* soul do? Will it be habituated to doing impure tasks or will it perform *satopradhan* (stage of goodness and purity) tasks? Arey, what will a *tamopradhan* soul do? A *tamopradhan* soul will be immersed in impurity.
Student: The Supreme Soul Shiv has entered him, so....
Baba: Yes, it is another issue that he controls.

समयः 52.29-53.35
जिज्ञासुः- संगमयुगी जब 2018 में कृष्ण प्रत्यक्ष हो जायेंगे तब अन्य आत्माओं का पुरूषार्थ भी वही खत्म हो जायेगा कि आगे और चलता रहेगा? कि अब तक टू लेट होगा अब कुछ भी नहीं कर सकते?
बाबा- टू लेट का बोर्ड तो अभी... अभी नहीं लगा है। अभी लेट हुआ है। लेट हुए है लेकिन टू लेट नहीं हुए। जब टू लेट का बोर्ड लगना माना भयंकर दुनिया बन जायेगी, मारा-मारी की दुनिया बन जायेगी।
जिज्ञासु- तो शांति 18 तक ही है?
बाबा- जो पढ़ाई है वो शांति के टाईम तक हो सकती है कि अशांति के टाईम में पढ़ाई होगी?
जिज्ञासु- शांति के टाईम तक।
बाबा- और अभी जितनी शांति है उतनी शांति अगले वर्ष नहीं रहेगी। अगले वर्ष दुनिया में जितनी शांति होगी उससे अगले वर्ष उतनी शांति नहीं रहेगी। ये अशांति बढ़ती ही जायेगी-3। अशांति की जब अति हो जायेगी तब पहला संगठन उदय होगा।
Time: 52.29-53.35
Student: When the Confluence Age Krishna is revealed in 2018, will the *purusharth* of the other souls end there or will it continue? Will it be too late for them to make any effort?
Baba: The board of too late has not yet been displayed. Now it is late. It is late but not too late. When the board of too-late is displayed, it means that the world will become dangerous; there will be bloodshed in the world.
Student: So, the peace is only upto (20)18?
Baba: Do studies continue in the times of peace or will studies take place in the times of disturbances?
Student: As long as there is peace.
Baba: There will not be as much peace in the next year as there is this year. There will not be so much peace in the year subsequent to the next year as there is next year. This disturbance will go on increasing, go on increasing, and go on increasing. When the disturbances reach the extreme level, the first gathering will emerge.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 54.15-56.22

जिज्ञासुः- बाबा किसी वार्तालाप में बोला कि अगर जिन आत्माओं की सेवा करते हैं उनके सिग्नेचर करा के कम्पिल भेज सकते हैं। तो क्या.....

बाबा- प्रत्यक्षता करना जरूरी है क्या? अरे, आप जिन आत्माओं की सेवा करेंगे वो अपने आप ही भट्ठी करने के लिए वहाँ पहुँचेंगे और अपने आप बोलेंगे हमको इन्होंने संदेश दिया, इन्होंने समझाया। वो निश्चयपत्र में खुद ही लिखेंगे। आपको प्रत्यक्षता करने की क्या जरूरत है? जैसे हमने ये सेवा की...

जिज्ञासु- बोला है कि इस तरह भेज सकते हैं। तो उससे क्या मैं तात्पर्य पूछ रही हूँ क्या मतलब, उसका क्या मतलब, मतलब भेज सकते हैं?

बाबा- कौन भेज सकते हैं?

जिज्ञासु- ऐसे वार्तालाप में बोला कि उन आत्माओं की साइन करवा के कम्पिल भेज सकते हैं।

बाबा- नहीं, ये तो ठीक बात नहीं। ये तो नहीं बोला हुआ, कुछ आपने दूसरा बात समझ लिया। अपनी की हुई सेवा को खुद प्रत्यक्ष करने की क्या जरूरत?

Student: Baba, it has been said in a discussion that we can take the signatures of the souls whose service we do and send them to Kampil. So…

Baba: Is it necessary to reveal/show-off (your service)? Arey, the souls whose service you do will reach there to do *bhatti* on their own and they will tell on their own that this person gave us the message, this person explained. They themselves will write in the *nischay patra* (letter of faith). Is it necessary for you to reveal (your service)? Like, I did this service…..

Student: It has been said that we can send like this. So, I mean to ask, what does this mean? Can we send like that?

Baba: Who can send?

Student: It has been said like this in a discussion that we can take the signatures of those souls and send them.

Baba: No, this is not correct. It has not been said like this; you understood it differently. What is the need to reveal your service yourself?

जिज्ञासु - इतने समय से वो कर रही हैं, सुन रही हैं और...

बाबा- सुनने दो।

जिज्ञासु- ऐसा नहीं कुछ?

बाबा- सुनने दो ना। वो सुनकर के परिपक्व जब हो जायेगी तो अपने आप उनको खींच होगी कि हम भी तो देख जाके वो स्थान कैसा है। आत्मा जब शरीर छोड़ती है और शरीर छोड़ने के बाद गर्भ में प्रवेश करती है, बाप के घर में जाके जन्म लेती है तभी तो बाप का बच्चा कही जाती है। उसको अंदर से इच्छा ही नहीं होगी कि हम जायें, ललक ही पैदा नहीं हुई तो उसके बुद्धि में ज्ञान बैठा ही नहीं। ज्ञान जिसको बुद्धि में बैठेगा उसको कहने की हमें दरकार नहीं कि आ रहा है या इसकी हमने सेवा की, इसकी हमने साल भर सेवा की फिर ये आ रहा है; ये कुछ नहीं। जिन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

आत्माओं की सेवा होगी वो स्वत: ही पहुँचेगी। सिर्फ उनको रास्ता बताना है कि कैसे पहुँचना है; अगर पूछती है तो।

जिज्ञासु- सिर्फ संदेश दो।

बाबा- हाँ, संदेश देना हमारा फर्ज है।

Student: (Should we write) That they have been doing, listening [to knowledge] for this long.
Baba: Let them listen.
Student: Is it not so?
Baba: Let them listen. When they become mature after listening, they will automatically be attracted to go, [they will think], "let us also go and see that place (i.e. Kampil), how it is". When a soul leaves its body and after leaving its body, when it enters the womb, when it goes and is born in the father's home, it is called a father's child. If the desire to go does not emerge in it at all, when it hasn't at all developed the eagerness, then [it means that] the knowledge has not sat in its intellect at all. There is no need for us to inform about the one in whose intellect the knowledge sits, that he is coming or that we have served him; we have served him throughout the year and he is coming. All this is not required. The souls which are served will reach (Kampil) automatically. They should just be shown the path how they can reach there, if they ask.
Student: Just give the message.
Baba: Yes, it is our duty to give the message.

……………………………………………………………………………………………………

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info